प्रश्न - हिन्दू धर्म का परिचय देते हुये इसकी विशेषताओं को बतलाईए।

उत्तर - विश्व के प्राचीनतम धर्मो में हिन्दू धर्म की गणना अक्सर प्राचीन धर्म के रुप में की जा सकती है। जिस प्रकार सभी धर्मो में कोई एक ईश्वर, प्रवर्तक और कोई एक पवित्र ग्रन्थ होता है। हिन्दू धर्म में ऐसा नही है। हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवता है तथा अनेक ग्रन्थ हिन्दू धर्म के आधार है। शंभुनाथ कहते है कि - हिन्दू धर्म किसी एक पैगम्बर या मनुष्य का चलाया हुआ नही है और न किसी एक चिंतन में सीमित है। हिन्दू धर्म का प्राचीन ग्रन्थ वेद है जिसमें बहुत से देवता है। पौराणिक गाथाओं में शिव, देवी दुर्गा, राम कृष्ण, हनुमान, गणेश आदि अनेक देव है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म में धार्मिक आध्यात्मिक साधना संबधी भी अनेक मार्ग है। हिन्दू धर्म की मान्यता है कि ईश्वर तक पहुचने के अनेक मार्ग है इसलिए हिन्दू धर्म इन विविध साधनात्मक मार्गो को स्वीकार करता है जबकि अन्य धर्म केवल अपने एक मार्ग को ही सत्य मानते है।

हिन्दू धर्म ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म कर्मफल, योनियां स्वर्ग-नरक को स्वीकार करता है। हिन्दू धर्म के चारो दिशाओं में चार तीर्थस्थान है उत्तर दिशा में बद्रीनाथ धाम, दक्षिण दिशा में रामेश्वरम, पूर्व दिशा में जगन्नाथपुरी तथा पश्चिम दिशा में द्वारिकानाथ हिन्दू धर्म के पवित्र प्राचीन ग्रन्थ वेद है जो चार है

ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद; वेदों के पश्चात अनेक प्रकार के उपनिषद हैं पर प्रमुख उपनिषद 11 हैं जिनके नाम ईशावास्योपनिषद, केनोपनिषद, कठ उपनिषद प्रश्न उपनिषद, मुण्डक उपनिषद, माण्डूक्य उपनिषद ऐतरेय उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद छांदोग्य उपनिषद तथा श्वेताश्वतर उपनिषद,
हिन्दू ग्रन्थों में गीता को अत्यन्त महिमा प्राप्त है। रामायण महाभारत जैसे महाग्रन्थ हिन्दू धार्मिक जनमानस में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। ब्रह्मसूत्र, रामचरित मानस, भागवत कथा आदि अनेक हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रन्थ हैं। हिन्दू धर्म में दशहरा, दीपावली, होली, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी जैसे अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं।
यही हिन्दू धर्म का सामान्य परिचय है।

हिन्दू धर्म की निम्नलिखित महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं-

1- हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी धार्मिक स्वतन्त्रता है।
2- हिन्दू धर्म में ईश्वरानुभूति के अनेक मार्गों को 3 प्रकार से व्याख्यायित किया गया है।
3- हिन्दू धर्म अनन्त जीवन और सकारात्मकता में विश्वास रखता है।
4- हिन्दू धर्म में नैतिक साधना को सर्वोच्च साधन माना गया है।
5- हिन्दू धर्म में चार युग, चार आश्रम, चार पुरुषार्थों की विवेचना की गई है।
6- हिन्दू धर्म में धर्म के अर्थ को सबसे अलग रूप में समझाया गया है-

इन विशेषताओं की व्याख्या इस प्रकार है-

1- हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी धार्मिक स्वतंत्रता है - दुनिया में जितने भी धर्म है वे सभी यह मानते है कि उनके धर्म के अनुयायीयों को एक मार्ग पर चलना अनिवार्य है अर्थात उस धर्म के नियमों, अपने धर्म पर आधारित जीवनशैली का पालन करना अनिवार्य है केवल एक हिन्दू धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो यह मानता है कि जिसको जो धार्मिक नियम अनुकूल लगे वह उसका पालन कर सकता है इसलिए हिन्दू धर्म में हमें अनेक मार्ग दिखलाई पड़ते है | यह धार्मिक स्वतंत्रता हिन्दू धर्म की अद्भुत विशेषता है।

2- हिन्दू धर्म ने अनेक मार्गो का वर्गीकरण को 3 प्रकार से व्याख्यायित किया है - हिन्दू धर्म अपने सभी मार्गों को जो ईश्वर तक पहुंचते है उनको 3 प्रकार से वर्गीकृत किया है जिसे ज्ञानमार्ग भक्तिमार्ग तथा कर्ममार्ग बतलाया है | गीता में श्रीकृष्ण ने इन तीनों मार्गो की विवेचना की है। हिन्दू धर्म मानता है कि किसी भी व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुकूल कोई एक मार्ग, ज्ञान, भक्ति या कर्म का चयन कर लेना चाहिए जो उसे ईश्वर रूपी साध्य तक ले जाता है।

3- हिन्दू धर्म अनन्त जीवन और सकारात्मकता में विश्वास रखता है - हिन्दू धर्म की मान्यता है कि जब किसी मनुष्य की मृत्यु होती है तब

उसका शरीर नष्ट होता है किन्तु उसकी आत्मा नष्ट नहीं होती है वह कर्मफल के आधार पर पुनः जन्म लेती है अतः हिन्दू धर्म मृत्यु की अवधारणा में पुनर्जन्म को महत्वपूर्ण मानता है अतः मनुष्य का मृत्यु में सबकुछ नष्ट नहीं होता वह लौटकर इस धरती पर फिर से आता है यह सकारात्मकता और अनन्त जीवन का प्रतीक है।

4- हिन्दू धर्म में नैतिक साधना को सर्वोच्च साधना माना गया है - हिन्दू धर्म में तपस्या, व्रत, संयम, योग आदि क्रियाओं का एक ही उद्देश्य है वह है शारीरिक और मानसिक शुद्धिकरण। हिन्दू धर्म यह मानता है कि सर्वोच्च सत का मार्ग नैतिक शुभता है। व्यक्ति या साधक का नैतिक रूप से पक्का होना हिन्दू धर्म की प्रारम्भिक और प्रमुख अवधारणा है। प्रमुख आस्तिक और नास्तिक दर्शन की भारतीय शाखाओं में नीतिमीमांसा या नीतिशास्त्र पर भी गंभीरता से चिंतन किया गया है।

5- हिन्दू धर्म में चार युग, चार आश्रम, चार पुरुषार्थों की विवेचना की गई है - हिन्दू धर्म में जीवन की सार्थक मीमांसा कर इसे व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। एक व्यक्ति 100 वर्ष तक जीवन जीने की इच्छा रखे और 25 वर्ष ज्ञानार्जन (ब्रह्मचर्य आश्रम), 25 वर्ष विवाह कर कर्तव्य पालन (गृहस्थ आश्रम), 25 वर्ष भौतिक वस्तुओं से वैराग्य का अभ्यास (वानप्रस्थ आश्रम) तथा अंतिम 25 वर्ष

संन्यासी सा जीवन व्यतीत करें (सन्यास आश्रम), इस प्रकार पूरे जीवन को व्यवस्थित किया गया है। इसी प्रकार मानव के व्यक्तिगत जीवन को भी चार लक्ष्यों पुरुषार्थों में विभाजित किया गया है और बतलाया गया है मानव जीवन के समयानुसार चार लक्ष्य है धर्म का ज्ञान, अर्थ अर्जन, कामपूर्ति तथा मुक्ति या मोक्ष। इस प्रकार चार पुरुषार्थ— धर्म अर्थ, काम और मोक्ष से जीवन की व्याख्या की गई है। चार युग भी है जिन्हे सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलयुग कहा गया है हर युग की अवधि और युग प्रभाव का उल्लेख है। हर युग में हिन्दू धर्म के अनुसार ईश्वर अवतार रूप धारण कर आते है और धर्म की स्थापना करते है।

6- हिन्दू धर्म में धर्म के अर्थ को सबसे अलग रूप में समझाया गया है— हिन्दू धर्म में धर्म को सबसे उंचा और सर्वोच्य स्वीकार किया गया है लेकिन अन्य धर्मो के तरह हिन्दू धर्म में कोई एक ही प्रकार की आचार संहिता, ग्रन्थ और कोई एक ईश्वर की आराधना करना नही है वरन् हिन्दू धर्म में धर्म का अर्थ है धारण करना। धारण करना अर्थात सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को अपने स्वभाव में शामिल करना। जो व्यक्ति इन गुणों इन मूल्यों को धारण करता है वही धार्मिक है। इस प्रकार हिन्दू धर्म में धर्म शब्द की एक विशिष्ट व्याख्या की गई है।

यही हिन्दू धर्म की प्रमुख विशेषताएं है।